International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

"किशोर एवं किशोरियों का साथियों के साथ समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ. ममता खपेडिया

सहायक प्राध्यापक (गृह विज्ञान)

माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर

कन्या महाविद्यालय मोती तबेला. इंदौर

➢ प्रस्तावना:-

किशोरावस्था किसी भी समाज की वास्तविक पूंजी है। इन्हे राष्ट्र, समाज के विकास के लिए सुरक्षित एवं सुरक्षित किया जाना चाहिए। किशोरावस्था बाल्यावस्था की अंतिम अवस्था है, संपूर्ण बाल विकास में इस अवस्था का बहुत अधिक महत्व होता है यह अवस्था शारीरिक और मानसिक उतथल पुथल भरी होती है। किशोरावस्था लोगों के जीवन में एक कठिन विकास अवधि का प्रतिनिधित्व करती है किशोरावस्था में किशोर एवं किशोरी अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं यह समस्याएं किशोर के व्यवहार को सरलता से जटिल तारीख जटिलता की ओर ले जाती है वर्तमान समय में किशोर एवं किशोरिया अपने साथियों के साथ समायोजन में एक विशेष प्रकार का व्यवहार देखने को मिलता है।

समायोजन की अवधारणा सबसे पहले डार्विन ने थी। जिन्होंने इसे भौतिक दुनिया में जीवित रहने के लिए एक अनुकूल के रूप में इस्तेमाल किया था मनुष्य अन्य व्यक्तियों पर आश्रित होने से उत्पन्न होने वाली शारीरिक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक मांगों को समायोजन करने में सक्षम है। समायोजन घर की जीवन

स्थितियों में, स्कूल में, व्यस्क होने पर कार्य स्थल में, वृद्धावस्था में एक संगठन आत्मक व्यवहार में, समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमें एक सुखी और सुख हाल जीवन की ओर ले जाती है स्वयं एवं अपने साथियों के साथ समायोजन व्यक्ति के जीवन और शिक्षा में विकास के लिए अति आवश्यक होता है।

- **समायोजन मुख्यतः**

तीन बातों पर निर्भर करती व्यक्ति की इच्छाओं, विचारों, प्रेरणाओं, और लक्ष्य, आदि के संबंध में जितना अधिक समन्वय होता है समायोजन उतना ही अधिक अच्छा होता है यदि इसमें आवश्यकता से कम समन्वय हो तो समायोजन दुर्बल होगा। व्यक्ति की इच्छा विचार आचार्य परिणाम और लक्षण आदि की पूर्ति की मात्रा कम और किस रूप में हुई है इस पर समाचार आधारित होता है उनकी पूर्ति कितनी अधिक होगी समायोजन उतना अधिक अच्छा होगा व्यक्ति की इच्छाओं परिणाम लक्षण सामाजिक मूल्यों से कहा तक मेल खाते हैं यह भी समय समायोजन को प्रभावित करता है।

- **आवश्यता एवं महत्व :-**

किशोरावस्था एक समस्याओं से भारी अवस्था होती है इसे शारीरिक एवं मानसिक उत्तल-पुथल भारी अवस्था कहते हैं। इस अवस्था में किशोर एवं किशोरी को समायोजन में अनेको समस्याओं का सामना करना पड़ता है। किशोर एवं किशोरिया राष्ट्र के विकास का एक अच्छा खासा भविष्य है, इसी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए

शोध अध्ययन हेतु " किशोर एवं किशोरियों का साथियों के साथ समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन" विषय की आवश्यकता है।इस अध्ययन का बहुत अधिक राष्ट्र के विकास हेतु प्रभाव पड़ेगा राष्ट्र के विकास में किशोरावस्था का समायोजन का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

- **उद्देश्य: -**

01किशोर - किशोरियों का साथियों के साथ समायोजन का अध्ययन करना।

02 किशोर - किशोरियों की शैक्षणिक योग्यता का अध्ययन करना।

- **उपकल्पना:-**

01किशोर - किशोरियों का साथियों के साथ समायोजन का सार्थक अन्तर नहीं है।

02 किशोर - किशोरियों की शैक्षणिक योग्यता का सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रतिदर्श इकाई :- प्रस्तुत अध्ययन में 50 किशोर एवं 50 किशोरियों का चयन किया गया है

अध्ययन के चर :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वतंत्र चर में किशोर एवं किशोरी किशोरियों। आश्रित चर पर किशोर एवं किशोरियों का समायोजन एवं शैक्षणिक अध्ययन एवं परिवार का आकार आदि।

समंक संकलन के स्त्रोत :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रारंभिक समंक हेतु स्वनिर्मित अनुसूची एवं श्रीमती रागिनी दुबे द्वारा किशोर- किशोरियों के समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया। द्वितीय समंक के लिए लघु शोध, इंटरनेट, पुस्तक, एवं अन्य साधनका प्रयोग किया गया।

➢ सारणीयन एवं वर्गीकरण:-

तालिका नं. 01

किशोर -किशोरियों का साथियों के साथ समायोजन संबंधित विवरण।

क्रमांक	विवरण	समायोजन		परीक्षण
		किशोर	किशोरियों	
1	अत्यधिक उच्च	11.6	12.5	5
2	उच्च	13.7	13.6	11
3	साधारण	13.2	14.6	12
4	निम्न	17	15.4	7
5	अत्यधिक निम्न	14.6	17.25	5

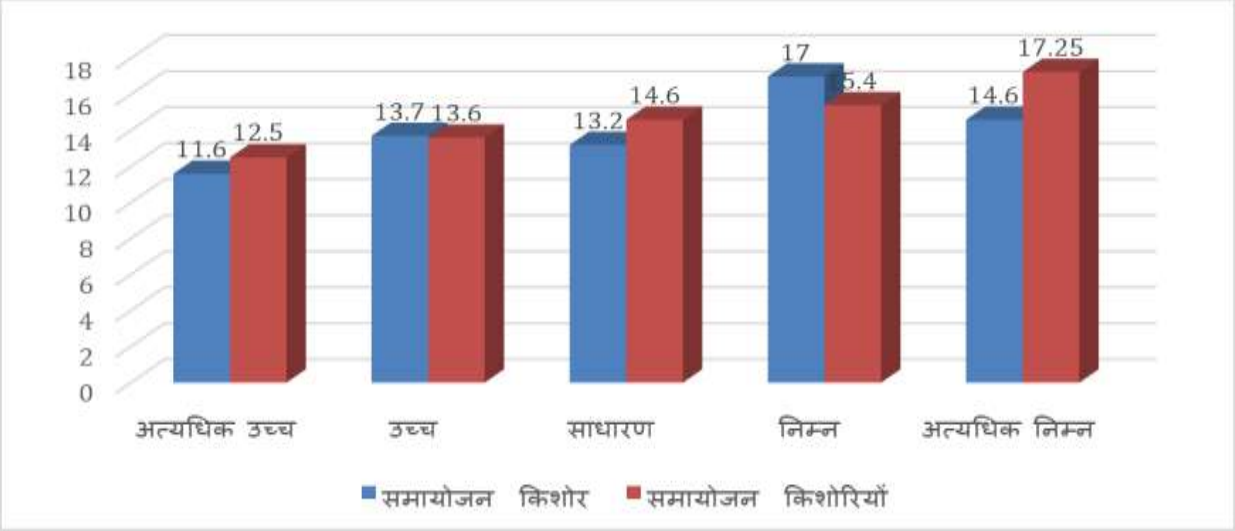

तालिका नं. 02

किशोर किशोरियों का शैक्षणिक योग्यता से संबंधित विवरण।

क्रमांक	विवरण	किशोर	किशोरियों
1	अनपढ़	8	10
2	प्राथमिक हाई स्कूल एवं हाई सेकेंडरी	28	30
3	उच्च शिक्षा	32	30
4	अन्य शिक्षा	12	15
5	तकनीकी शिक्षा	20	15
		100 N=50	100 N=50

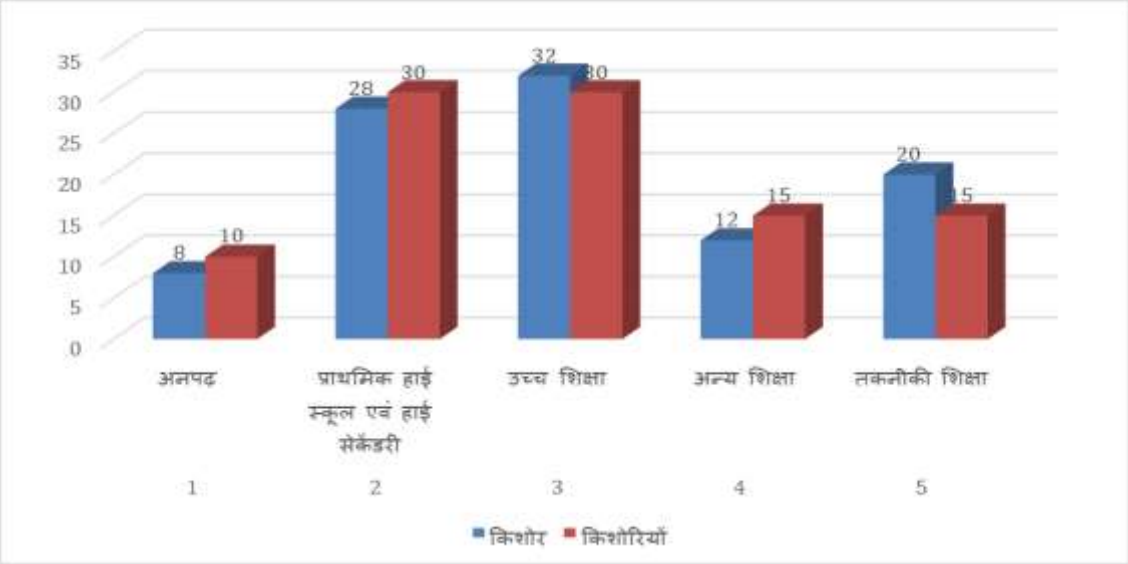

➢ **निष्कर्ष:-**

01 किशोर किशोरियों का अपने साथियों के साथ क्रमशः अत्यधिक उच्च स्तर का मध्यमान 11.6 एवं 12.5, जो स्वतंत्रता के अंश पर असर्थक है। उच्च स्तर का माध्यम13. 7 एवं 13.6, जो स्वतंत्रता के अंश पर सार्थक है। साधारण स्तर का

मध्यमान 13.2 एवं 14.6, जो स्वतंत्रता के अंश पर असर्थक है। निम्न स्तर का माध्यम 17 एवं 15.4, जो स्वतंत्रता के अंश पर असर्थक है। अत्यधिक निम्न स्तर का माध्यम 14.6 एवं 17.25 जो स्वतंत्रता के अंश पर सार्थक है।

02 किशोर - किशोरियों का शैक्षणिक शौध अध्ययन से पाया गया कि किशोर - किशोरियों का प्रतिशत क्रमश अनपढ़, प्राथमिक हाई स्कूल एवं हाई सेकेंडरी, उच्च शिक्षा, अन्य शिक्षा, 8, 28, 32, 12, एवं 20 प्रतिशत एवं किशोरियों 10, 30, 30, 15,एवं 15 प्रतिशत पाया गया।

➢ संदर्भ :-

1. आहूजा राम 2000 '' सामाजिक समस्याएं'' रावत पब्लिकेशन दिल्ली।
2. तोमर रामविहार सिंह पारिवारिक ''समाजशास्त्र तथा आदर्श'' अजमेर प्रकाशन
3. https://www.ijrti.org/papers/IJRTI2212099.pdf
4. https://g.co/kgs/cxBcbhJ
5. https://g.co/kgs/jkyJnix